Volume-II, No. 1, Feb -2015, pp. 1-7

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह एक साधन (अनौपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में)

शशी कान्ता चौधरी, शोधकर्त्रीः
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान भारत।
डॉ. मधु माथुर, निर्देशिकाः
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान भारत।

प्रस्तावना –

किसी भी राष्ट्र की परम्परा एवं संस्कृति उस राष्ट्र की महिलाओं से परिलक्षित होती है। भारत के प्राचीन धर्मग्रन्थों में लिखा है "यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता" स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में" औरतों की स्थिति में सुधार लाये बिना दुनिया का कल्याण सम्भव नहीं है। एक पंख से चिड़िया उड़ान नहीं भर सकती" महिला विकास की प्रक्रिया के दो ही उपचार संभव हैं – शिक्षा व सशक्तिकरण । शिक्षा एक साधन है जो मानव जीवन के स्तर को ऊपर उठाता है। शिक्षा व्यक्ति की क्षमता को साकार करने की प्रक्रिया है। शिक्षा समाज की लिखित एवं मुद्रित संस्कृति को समझने एवं उसके साथ सक्रिय संवाद स्थापित करने की योग्यता प्रदान करती है। शिक्षा मानव का बौद्धिक विकास कर उसे सचेत नागरिक एवं उपभोक्ता बनाती है तथा आत्मनिर्भरता स्वायत्तता व अधिकार सम्पन्नता की भावना विकसित करती है। आत्मसंतोष, आत्मिक ऊर्जा और अपने अस्तित्व का अहसास कराती है। शिक्षा ज्ञान प्राप्ति का अमूल्य अस्त्र है और ज्ञान शक्ति का प्रतीक है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने महिलाओं की शिक्षा पर अधिक जोर दिया और शिक्षा को महिला विकास का एक महत्वपूर्ण उपाय माना। राधाकृष्णन जी ने कहा है कि यदि एक पुरूष शिक्षित होता है तो वह स्वयं अपना विकास करता है, मगर यदि एक महिला शिक्षित होती है तो पूरे परिवार को शिक्षित करती है। समाज का भावी सदस्य उसी के ऑचल की छाँव में पलकर संसार में खड़ा होता है। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण एक दूसरे के पूरक हैं शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो महिलाओं के व्यक्तित्व में अपेक्षित विकास ला सकता है। शिक्षा ही समाज की मानसिकता व महिलाओं के दृष्टिकोण को बदल सकता है और उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न कर सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता :–

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को शिक्षित करने के लिये अनौपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में स्वयं सहायता समूह एक सबल साधन के रूप में सामने उभरकर आया है इसलिये महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका को जानने के लिये शोधकर्त्री के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुयी और अध्ययन में इसकी आवश्यकता सामने आयी। स्वयं सहायता समूह किस प्रकार महिलाओं को सशक्त बनाने में अपनी भूमिका निभाता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :–

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है, जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता हैं। साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को उस स्थिति तक पहुंचाता है जहॉ वह अपने क्षेत्र तथा परस्पर विरोधी उपलब्धियां एवं नवीन अनुसंधान कार्यों से परिचित होता है।

मिश्रा हरिगोविन्द (2012) :–

इन्होंने "स्वयं सहायता समूह" द्वारा सदस्यों के शैक्षिक सशक्तिकरण का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं की सशक्तता पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव पड़ता है। महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक पक्ष मजबूत पाये गये। उनकी इस क्षेत्रों में स्थिति को सुधारा जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. जयपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का अध्ययन करना।

2. जयपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का अध्ययन करना।
3. जयपुर जिले की ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. महिलाओं को स्वयं सहायता समूह द्वारा शैक्षिक रूप से सशक्त किया जाना सम्भव है
2. महिलाओं को स्वयं सहायता समूह द्वारा सामाजिक रूप से सशक्त किया जाना सम्भव है
3. महिलाओं को स्वयं सहायता समूह द्वारा आर्थिक रूप से सशक्त किया जाना सम्भव है।

अध्ययन की विधि :–

अध्ययन की विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा आंकडों को संकलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :–

अध्ययन में यादृच्छिक विधि द्वारा जयपुर जिले के पांच प्रकार के स्वयं सहायता समूह के 50 समूहों में से 500 महिला सदस्यों को लिया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्रत्यक्षीकरण मापनी, अवलोकन अनुसूची, साक्षात्कार अनुसूची और व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र को प्रयोग में लिया है।

प्रशासन व अंकन :–

जयपुर जिले के पांच प्रकार के स्वयं सहायता समूह के 50 समूहों में से 500 महिला सदस्यों पर प्रसाशित कर, आंकडे एकत्रित कर, उनका विश्लेषण कर अंकन किया गया है। अंकन में सरलतम प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है और परिणाम प्राप्त किये गये हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

ऑकडों के आधार पर उनका निष्कर्ष निकाला गया है और निष्कर्ष में पाया गया है कि स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक पक्ष में सशक्तता पाई गई। प्रत्यक्षीकरण मापनी में पाँच बिन्दुओं पर उनके मत प्राप्त कर निष्कर्ष निकाले गए हैं। अवलोकन द्वारा प्रत्यक्ष रूप से उनकी क्रियाओं के आधार पर परिणाम की प्राप्ति की गई है और साक्षात्कार में उनके प्रत्यक्ष वार्तालाप के द्वारा ऑकडें प्राप्त किये है। विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं और भविष्य के लिये सुझाव भी दिये गये है।

संदर्भ सूची :–

- सिंह भारत(2008) " सबके लिये शिक्षा" , नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- भारद्वाज, दिनेश चन्द(2010) "भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्याऐं" आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- बुच.एम.बी (1993–2000) "सिम्सथ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन" नई दिल्ली, वोल्यूम –ए एन.सी.ई.आर.टी.।
- माथुर पी.एन. (1999) "एमपावरमेन्ट ऑफ वीमन्स" नई दिल्ली, इण्डियन एग्रीकल्चर रिसर्च इन्स्टीट्यूट।
- सिह, अरूण के.(2000) " "एमपावरमेन्ट ऑफ वीमन्स इन इण्डिया" नई दिल्ली, मानव पब्लिकेशन, पी.वी.टी. लि०।
- स्वर्णलता ई.वी. (1997) "एमपावरमेन्ट ऑफ वीमन्स थ्रो सेल्फ हेल्प ग्रुप" नई दिल्ली डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस।
- सिंह, वाई.के. (2007) "रिसर्च मेथडोलॉजी" न्यू दिल्ली, ए.पी.एच प्रकाशन।